A SABHA

ne 9th December, 1994/18th Agrahayana, 1916 (Saka)

ne House met at eleven of the clock, r. Chairman in the Chair

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

MR. CHAIRMAN: Question No. 41.

*41. [The questioner (Shrimati Sarala Jaheswari) was absent. For answer, de col....infra]

Mr. CHAIRMAN: Now Question No. 42.

महात्मा गांधी की 125वीं जयन्ती के संबंध में कार्य योजना

*42 **श्री शंकरदयाल सिंह** : क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या महात्मा गांधी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर देश में किसी प्रकार की विशेष कार्य योजना तैयार की गई है ; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा और संस्कृति विभाग) में उप मंत्री (कुमारी शैलजा) : (क) और (ख) विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

(क) और (ख) महात्मा गांधी की 125वीं जयन्ती मनाने के लिये 106 सदस्यों वाली एक राष्ट्रीय समिति प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में गठित की गई है ? निम्नलिखित कार्यों के लिये चार उप-समितियां भी क्रमश: मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री आरिद हुसैन, डा. बी.एन. पांडे और श्री अटल बिहारी वाजपेयी, संसद सदस्य की अध्यक्षता में गठित की गयी है :

(i) सरकारी कार्यकलाप

(ii) गैर-सरकारी और स्वयंसेवी एजेंसियां

(iii) गांधीवादी संस्थाएं तथा

(i) अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलाप ।

उप-समितियों की बैठक हो चुकी हैं और उनकी अनुशंसाओं के आधार पर राष्ट्रीय समिति के अनुमोदनार्थ निम्नलिखित विषयों पर कार्य योजना तैयार कर ली गई है :

(i) स्मरणोत्सव-कार्यक्रमों का आयोजन करना ;

(ii) गांधीवादी आदर्शों का प्रसार करने के लिये अभियानों एवं यात्रा का आयोजन करना ,

(iii) गांधीवादी संस्थाओं को सुदृढ़ बनाना,

(i) शिक्षा में गांधीवादी अध्ययन एवं उसके विकल्प को लोकप्रिय बनाना,

(v) अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों का आयोजन करना,

(vi) जन-प्रचार माध्यमों व प्रकाशनों के माध्यम से गांधीवादी आदर्शों पर प्रकाश डालना,

(vii) पुरस्कार (अवार्डस) व रत्न सदस्यता (फैलोशिप) प्रारंभ करना,

(vii) संगठनात्मक ढांचा ।

श्री शंकर दयाल सिंह : सभापति जी, पहले इस बात के लिये मैं मानव संसाधन मंत्री को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने गांधी जी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर कई कार्यक्रम निर्धारित किये हैं....

श्री संघ प्रिय गौतम : मगर गांधी टोपी नहीं पहनी है ।

श्री शंकर दयाल सिंह : और इस संबंध में हमारे सामने जो सरकार की ओर से वक्तव्य आया है उसे मैं पूरा नहीं अधूरा मानता हूं । गांधी जी ने कुछ मूल्यों की रक्षा के लिये आजादी की लड़ाई लड़ी और उन्होंने सपना देखा था कि आजादी के बाद कुछ ऐसे मुद्दे होंगे जिन को महत्वपूर्ण

ढंग से भारत में सुलझाया जाएगा या अमल में लाया जाएगा—जैसे ग्रामोद्योग, बेसिक शिक्षा, राष्ट्र भाषा, भारतीय भाषाओं की उन्नति, मातृ भाषा में ही प्राथमिक शिक्षा, राष्ट्रीय एकता, सद्भाव आदि। ये कुछ गांधीवाद के मूलभूत सिद्धांत थे। मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि गांधी जी की 125वीं जयंती के अवसर पर क्या भारत में 125 ऐसे केन्द्रों की स्थापना की जाएगी जिनमें गांधी जी के उन मूलभूत सिद्धांतों की रक्षा हो सके, उनका प्रसार किया जा सके और आने वाली पीढ़ी गांधी जी की उन बातों से परिचित हो सके, प्रभावित हो सके ? सरकार इस संबंध में अपना मंतव्य स्पष्ट करे।

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री अर्जुन सिंह): आदरणीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने जो एक व्यापक संदर्भ का उल्लेख किया है, निश्चय ही इस वर्ष उसी संदर्भ में कई कार्यक्रमों को बनाने के लिए अलग अलग उप-समितियों का गठन किया गया है। उनके सुझाव भी आए हैं। जहां तक यह खास सुझाव जो आपका है कि 125 ऐसे केंद्र स्थापित किए जाएं तो इस तरह का सुझाव अभी नहीं आया है। लेकिन मैं माननीय सदस्य के...

श्री शंकर दयाल सिंह: बीच में, मैं यह कहना चाहता हूं कि इस तरह का सुझाव मैंने—चूंकि मैं उस राष्ट्रीय समिति का एक सदस्य हूं—दिया है, और लिखित रूप से भी दिया है, बैठक में भी मैंने कहा है।

श्री अर्जुन सिंह: इस विषय पर अभी विचार इस संदर्भ में नहीं हुआ है कि 125 केन्द्र कहां स्थापित होंगे और क्या होंगे। लेकिन उसके अंतर्गत जो आपने अलग-अलग मुद्दे बताए हैं उनके लिए अलग-अलग स्थानों पर विचार के लिए भी कार्यवाही के लिए भी जो सुझाव आए हैं उनमें उनका समावेश है। केन्द्र स्थापित करने के बारे अभी कोई फैसला नहीं हुआ है। उस पर भी विचार जरूर किया जाएगा।

श्री शंकर दयाल सिंह: सभापति महोदय, आज ही अखबारों में यह पढ़ने को मिला है कि सरकार ने यह निश्चय [illegible] देश में दो केन्द्रीय विश्वविद्यालय [illegible] किए जायेंगे, एक हिन्दी विश्वविद्यालय [illegible] में और एक उर्दू विश्वविद्यालय [illegible] में। चूंकि गांधी जी ने राष्ट्रभाषा पर उन से अधिक जोर दिया था और गांधी जी का यह कहना था कि जिस राष्ट्र में अपनी भाषा न हो वह राष्ट्र गूंगा होता है। उनका बार-बार कहना था कि स्वाधीन भारत में हिन्दी ही यहां की राष्ट्रभाषा होगी जिसे हम राजभाषा कहते हैं और उनका कहना था कि अन्य भारतीय भाषाओं का उसी रूप में विकास हो। मैं सरकार से इस संबंध में यह जानना चाहूंगा कि क्या प्राथमिक शिक्षा गांधी जी के कहे अनुसार हर जगह मातृभाषा में होगी और जो केन्द्रीय विश्वविद्यालय आपने वर्धा में स्थापित किया है वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय क्या गांधी जी के नाम पर या महात्मा गांधी केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय नामकरण करेंगे ?

श्री अर्जुन सिंह: आदरणीय सभापति महोदय, जहां तक गांधी जी के विचार राष्ट्रभाषा के संबंध में हैं वे न केवल हम सब को विदित हैं बल्कि वे मान्य भी हैं। प्रश्न केवल यह था कि भाषा के संबंध में कुछ तात्कालिक परिस्थितियां पैदा होंगी जिनके संदर्भ में पं० जवाहरलाल नेहरू ने कुछ वचन दिए देश के उन भागों के लिए जहां हिन्दी भाषा नहीं थी। उनके जो एग्रीमेंट्स हैं उनको ध्यान में रख कर ही आगे की कार्यवाही होगी, उससे अलग जाकर कार्यवाही होने का प्रश्न नहीं उठता। लेकिन जहां तक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रश्न है, इसका फैसला हुआ है और मैं समझता हूं कि वर्धा में उसको स्थापित करने के पीछे उद्देश्य यह था, क्योंकि गांधी जी की यह बहुत बड़ी इच्छा थी कि हिन्दी का महत्व और अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी उसका योगदान हो सकता है, इसी के संदर्भ में भी स्थापना हो रही है और केवल नेहरू जी के... ((व्यवधान)

श्री जनेश्वर मिश्र: नेहरू जी के वायदे को पूरा करने के लिए गांधी जी के विचारों की हत्या की जा सकती है तो यह बहुत खराब बात है।

श्री अर्जुन सिंह : और गांधी जी के नाम पर विश्वविद्यालय को स्थापित करने में मुझ कोई एतराज नहीं है ।

श्री शंकरदयाल सिंह: गांधी जी के नाम पर वह विश्वविद्यालय स्थापित किया जाएगा ?

अर्जुन सिंह : जी, हां ।

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, already there is a University in Kerala named after Mahatma Gandhi.

MR. CHAIRMAN: In name!

SHRI VAYALAR RAVI: Yes, Sir, in name only.

श्री नरेश यादव: सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि बापू जी का पूर्ण विश्वास था कि भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है, तो खास करके गांवों के लिए 125वीं जयन्ती के अवसर पर क्या कार्यक्रम हैं ? भारत सरकार ने 15 अगस्त को लाल किले के प्राचीर से घोषणा की थी कि गांधी जी के अलावा विनोबा, लोकनायक जय प्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई की शती मनाई जाएगी, तो इसके लिए कौन सा कार्यक्रम सरकार के पास में है, मैं इसकी पूरी जानकारी चाहता हूं ?

श्री अर्जुन सिंह: : सभापति महोदय, वह जो कार्यक्रम बना है पूरे वर्ष का इसमें कुछ पर तो कार्यवाही हो चुकी है और कुछ पर होनी है । इसमें ग्रामीण अंचलों में पंचायत स्तर पर देश की सभी ग्रामीण पंचायतों में इस विषय पर कार्यवाही की जाए, वहां यात्राएं हों, वहां के लोगों को गांधी जी के दर्शन से अवगत कराया जाए और चूंकि अब पंचायतें चुनी हुई हैं, इसलिए अन्य कोई कार्यक्रम भी वे करना चाहें तो इसके लिए भी उनको सहायता दी जाएगी । इस वक्त तो सभापति महोदय, मैं केवल इसी के बारे में बता सकता हूं, बाकी जो और अलग-अलग उन्होंने बताए हैं, वे मनाए जायेंगे या नहीं यह अलग से प्रश्न आएगा तो मैं जरूर बताऊंगा ।

श्री एस०एस० सुरजेवाला : सभापति महोदय, महात्मा गांधी ने हमेशा संपूर्ण नशाबंदी पर जोर दिया और वह चाहते थे कि इसके लिए मुल्क को कोई न कोई फैसला लेना चाहिए, क्योंकि यह शैतान की संज्ञा उन्होंने हर किस्म के नशे को दी थी, चाहे वह शराब है, चाहे अफीम है, चाहे दूसरे हैं । मैं मंत्री महोदय से यह पूछना चाहूंगा कि क्या सरकार का जो प्रोग्राम एक्शन प्लान है, इसमें संपूर्ण नशाबंदी जो है, उसको लागू करने के लिए इसको एक्शन प्लान में रखेगी ? अगर तुरन्त नहीं करा सकते तो कम-से-कम पांच साल के बाद सन् 2000 से पूरे मुल्क में शराबबंदी या नशाबंदी हो, क्या वे इस कार्यक्रम को शुरू करेंगे महात्मा गांधी के 125वें जन्म-दिवस के उपलक्ष में ?

श्री अर्जुन सिंह : सभापति महोदय, जो विचाराधीन कार्यक्रम है, उसमें नशाबंदी के संबंध में एक आंदोलन पूरे देश में चलाया जाये, इसका समावेश है । इसके लिए एन०जी०ओज० और अन्य स्रोतों द्वारा ऐसा किया जाएगा ।

मौलाना अबदुल्ला खान आजमी: सभापति जी, मैं आपके जरिए जानना चाहूंगा कि गांधी जी मजहबी एकता और भाईचारे एकता के हमारे बेमिसाल रहनुमा थे और इन्हीं मुत्तहदा इकदामात को कुछ लोग बरदाश्त नहीं कर सके और वह रहनुमा कुछ हत्यारों ने हम से छीन लिया जिनका वजूद अगर कुछ दिनों और भी हिंदुस्तान में रहता तो हिंदुस्तान को बहुत बड़ी ताकत के रूप में वह अहिंसा के मार्ग पर ले जाता । आज गांधी जी की 125वीं जयंती मनायी जा रही है । गांधी जी के बेपनाह सपने थे जिन्हें पूरा करने का फर्ज हम हिंदुस्तानियों पर आयद होता है । मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि गांधीजी ने जिन उसूलों के लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी, उन उसूलों को अमली जामा पहनाने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है । हिंसा के खिलाफ गांधीजी ने पूरी जिंदगी वक्फ कर दी थी, लेकिन आज हमारा मुल्क हिंसा के बादलों से घिरा हुआ है और फिरकापाराना तसव्वुर शबाब पर है । इस फिरकापाराना आहंगी को जिंदा रखने के लिए और फिरका परस्ती को खत्म करने के लिए जो कि गांधीजी का पहला उसूल था, उसके लिए सरकार क्या ठोस इकदामात कर रही है, मैं यह जानना चाहूंगा अपने वजीरे मौसूफ से ?

گاندھی جی کا پہلا اصول رہا۔ اس کیلئے سرکار کیا ٹھوس اقدامات کر رہی ہے۔ میں یہ جاننا چاہوں گا۔

श्री अर्जुन सिंह: : सम्मानिय सभापति महोदय... (**व्यवधान**) . .

श्री प्रमोद महाजन : उसके लिए गांधीजी का राम-राज्य सरकार कब ला रही है, ऐसा उनका पूछना है ?

श्री शंकर दयाल सिंह : बी० जे० पी० का राम-राज्य नहीं ।

डा० मुरली मनोहर जोशी : राम-राज्य दोनों का एक ही है ।

श्री प्रमोद महाजन : राम-राज्य राम का होता है, बी०जे०पी० का नहीं ।

MR. CHAIRMAN: Please proceed now. There is no need to get excited on this, I think.

मौलाना अबैदुल्ला खान आजमी : गांधीजी का राम-राज्य जिसमें इंसानियत की तहफ्फुज की यकीन रेहानी करवायी गयी थी, वह कब आएगा ? गांधीजी ने राम-राज्य के नाम से अहिंसा की तालीम दी थी, हिंसा की तालीम नहीं ।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: گاندھی جی کا رام راجیہ جس میں انسانیت کے تحفظ کی یقین دہانی کرائی گئی تھی وہ کب آئے گا گاندھی جی نے رام راجیہ کے نام سے اہنسا کی تعلیم دی تھی ہنسا کی تعلیم نہیں۔

श्री अर्जुन सिंह: आदरणीय सभापति महोदय, गांधीजी का समूचा जीवन और दर्शन संयम और मर्यादा से पूरी तरह आच्छादित था । इसके पहले कि हम और कुछ कहें, यह संयम और मर्यादा को इस सदन में कायम रखना भी जरुरी है ।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: چیئرمین صاحب۔ میں آپ کے ذریعہ جاننا چاہونگا کہ گاندھی جی نے بھی اہنسا اور بھائی چارگی کے راستے پر چلتے ہوئے اور انہی متحدہ اقدامات کو کچھ لوگ برداشت نہیں کر سکے اور وہ رہنما کچھ ہتیاروں نے ہم سے چھین لیا جس کا وجود اور کچھ دلوں اور بھی ہندوستان میں رہتا تو ہندوستان کو بہت بڑی طاقت کے روپ میں وہ اہنسا کے مارگ پر لے جاتا۔ آج گاندھی جی کی ۱۲۵ ویں جینتی منائی جا رہی ہے۔ گاندھی جی کے بے پناہ سپنے تھے جنہیں پورا کرنے کا فرض ہم ہندوستانیوں پر عائد ہوتا ہے۔ میں سرکار سے جاننا چاہتا ہوں کہ گاندھی جی نے جن اصولوں کے لئے اپنی جان کی فریاد دے دی۔ ان اصولوں کو عملی جامہ پہنانے کے لئے سرکار کیا قدم اٹھا رہی ہے ہنسا کے خلاف گاندھی جی نے پوری زندگی وقف کر دی تھی لیکن آج ہمارا ملک ہنسا کے بادلوں سے گھرا ہوا ہے اور فرقہ وارانہ تصور شباب پر ہے اس فرقہ وارانہ ہم آہنگی کو زندہ رکھنے کے لئے اور فرقہ پرستی کو ختم کرنے کے لئے جو کر

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

इतना ही मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि राम-राज्य की परिभाषा हमें और आपको देने की जरुरत नहीं है। राम-राज्य की परिभाषा जो गांधीजी ने दी है, हम उसी को मानते हैं उसके अलावा अगर आपकी कोई परिभाषा है तो क्षमा करेंगे, उससे हम सहमत नहीं हैं।

जहां तक उन उसूलों की बात है जोकि अहिंसा पर आधारित हैं, सद्भाव पर आधारित हैं और फिरकापरस्ती के खिलाफ वातावरण बनाने और संकल्प लेने की बात है, यह सब पूरी तरह से शासन के भी संकल्प हैं। यह मैं जरुर निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसे मामलों में कोई भी शासन अपने आप में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि देश के अंदर वह वातावरण न निर्मित किया जाय जिसके द्वारा समाज के जितने अंग हैं, जितने पहलू हैं, वह सब इन मर्यादाओं में बंधकर काम करने के लिए अपने को स्वयं निर्णायक स्थिति में न लाएं और उस दिशा में इस वर्ष सब के सहयोग से, हर पार्टी, हर फिरके और सब के सहयोग से वह वातावरण निर्मित करने की कोशिश की जाए ताकि देश फिरकापरस्ती, भाई भतीजावाद या कोई भी ऐसा वाद हो जिससे कि देश के अंदर विघटन की परिस्थितियां निर्मित होती हैं, उनसे सारा समाज संघर्ष कर सके। गांधीजी के इस 125वें वर्ष में हमें ऐसा संकल्प मिलकर लेने की जरुरत है और उसके लिए निश्चित रूप से प्रयास किया जाएगा।

MR. CHAIRMAN: Shri Pragada Kotaiah ...(*Interruptions*)...I think the ystem is not working.

श्री रामगोपाल यादव: : थैंक यूयर। मान्यवर, इस देश में कुछ ऐसी ताकतें रही हैं और जो अब भी हैं, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से गांधी जी की हत्या से संबंध रहा है। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो गांधी को राष्ट्रपिता मानने को तैयार नहीं हैं। सवाल का जो जवाब आया है, उसमें एक कमेटी और भी है, सब-कमेटी, जिसके चेयरमैन एक ऐसे सदस्य हैं, जो इन ताकतों से किसी न किसी रूप से जुड़े हुए हैं। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि क्या इस तरह के व्यक्तियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो कार्य किए जाएंगे गांधी के दर्शन के प्रचार और प्रसार के लिए, क्या वह उपयुक्त ढंग से संपन्न किए जाएंगे ? क्या वह इस बात से संतुष्ट हैं

श्रीमती सुषमा स्वराज : क्या इनका इशारा मायावती जी की तरफ है ?... (**व्यवधान**)...

श्री रामगोपाल यादव: हम लोग किसी की सफाई नहीं दिया। आप जवाब पढ़ लीजिए।... (**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: गांधी जी को राष्ट्रपिता न मानने वाली ताकतों में मायावती के बारे में आपका क्या कहना है? (**व्यवधान**) मायावती जी के बारे में आपका क्या कहना है ? (**व्यवधान**)

श्री अजीत जोगी: : सवाल मंत्री जी से कीजिए। सदन से क्यों कर रही हैं ? ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, you are supposed to address me. He need not have to answer that.

श्री जनेश्वर मिश्र: : सभापति जी, इसको कहते हैं—चोर की दाड़ी में तिनका। (**व्यवधान**)

SHRI CHATURANAN MISHRA: This is unparliamentary.

श्री अर्जुन सिंह: : आदरणीय सभापति महोदय, मैंने प्रारंभ में ही कहा और उसे फिर से दोहराना चाहता हूं कि महात्मा गांधी की 125वीं वर्षगांठ मनाने के मामले में देश के अंदर किसी स्तर पर किन्हीं भी पार्टियों में कोई मतभेद नहीं है और इसीलिए इस विषय पर हम इस प्रकार की बातों को लाना नहीं चाहते। हम यह मानकर चलते हैं कि जिन्होंने भी इस काम को करने के लिए अपनी सहमति दी है, वह गांधी जी के दर्शन, गांधी जी के विचार के ही संदर्भ में अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे।

श्रीमती मीरा दास: : धन्यवाद, चेयरमेन साहब। सर, गांधी जी को कोई राष्ट्रपिता माने या न माने, लेकिन आज वर्तमान के लिए गांधी जी का दर्शन, गांधी जी का विचार, गांधी जी का चिंतन देश के लिए बहुत अहम है और आवश्यक

भी है । फिर अगर हम कहते जाएं गांधी जी के बारे में, तो कहने के लिए समय भी नहीं होगा । एक बात जानना चाहूंगी, महिलाओं के लिए अगर हम यहां कुछ लाए हैं और हम यहां बात कर रहे हैं, उसमें क्या प्रोग्राम रखा है और रखेंगे इस साल में ? क्या क्या प्रोग्राम रखे हैं और कुछ इसमें लाएंगे या नहीं ?

श्री अर्जुन सिंह: : सभापति महोदय, गांधी जी के विचार महिलाओं के उत्थान के संबंध में, उनकी समस्याओं के निदान के संबंध में सर्वविदित हैं । शासन उनको पूरा करने के लिए बहुत सी योजनाएं भी चला रहा है । विशेषकर इस वर्ष महिलाओं से संबंधित कई पहलू ऐसे हैं, जिन पर कि अलग-अलग समय पर और उन पर अलग अलग स्थानों पर विचार और कार्य करने की योजना है ।

SHRI O. RAJAGOPAL: Sir, Mahatma Gandhi laid much stress on decentralisation of power. But, unfortunately, even though the Panchayati Raj legislation has been passed, we fined that most of the States have not implemented that or have not brought about those institutions. I want to know whether the Government is considering taking serious action against those States which are not implementing decentralisation of power or the Panchayati Raj institutions at least during the 125th year of Mahatma Gandhi's Birth Anniversary.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, to the best of my information I am sure, the hon. Member must also be aware that in this matter the Government of India has taken a very clear stand that all the State Governments must implement the Constitutional Amendment which provides for decentralisation of power. Now, many States have done it; some have not done it. About that also the Minister concerned has already made some statement recently. Sir, I am sure, all the States would see that it is implemented. In case they do not do it, certainly we would see what has to be done.

MR. CHAIRMAN: Shri Vayalar Ravi.

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, here the Minister has given the statement that a programme has been approved. The programme for the 125th birth centenary should involve the Indian people. The involvement of the Indian people could be done through the Central Government programmes as well as State Government programmes. In this connection, I would like to know what the steps are that you have taken to monitor the whole programme, a year-long programme with the State Governments. A calendar can be chalked out for the programme because this requires the involvement of all for a full year. I am afraid, Mr. Chairman, that kind of steps have yet to be taken up. I would like to know from the Minister whether he will take the initiative of involving all the State Governments and the Central Government for programmes along with all the Gandhian institutions.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, the hon. Member wanted to know as to how the programme is to be monitored. We have requested all the State Governments to set up committees for their States under the chairmanship of the Governor in which he Chief Minister and other public figures would be members. These Committees have been set up and we are quite certain that all the State Governments would take due care to see that programmes they draw, following some of the guidelines here and whatever else they want to do, are carried out. In addition, th eCentral Committee di.e. the National Committee would certainly evolve a certain mechanism to keep in touch to see if there is any laxity so that we could draw the attention of the hon. Governor who would be the Chairman of the State Government Committee.

MR. CHAIRMAN: Shri Bapu Kaldate.

डा० बापूकालदाते: : सभापति जी, गांधी जी की शिक्षा का बनियादी अगर कोई मकसद था तो वह था कि जो कहें सो करें, कथनी और करनी में कम से कम अंतर हो, कोई अंतर न हो तो ठीक बात है लेकिन कम से कम हो। मेरा कहना यह है कि गांधी जी ने स्वदेशी आंदोलन में खादी-व्रत को स्वीकार किया था और हम जानते हैं कि हम सब लोग उस समय खादी पहनते थे, जो लोग राष्ट्रीय आंदोलन के

साथ थे। तो अन्य कार्यक्रमों के बजाए अगर हम यह कर सकें कि कम से कम इस साल के लिए, गांधी जी की 125वीं जयंती के साल में, सब लोग, यहां बैठे हम लोग और जो सरकारी कर्मचारी हैं या जिनसे आपका संबंध है, वे सब लोग मिनिस्टरों सहित कम से कम एक साल के लिए खादी पहने, इस दिशा में सरकार इस साल में कुछ कर सकेगी ? अगर कर सकेगी तो क्या करना चाहती है ?

श्री अर्जुन सिंह: : सभापति महोदय, खादी के प्रचार-प्रसार और उसके कार्यान्वयन के संबंध में जो योजनाएं हैं, वे तो आपको मालूम हैं। व्यक्तिगत स्तर पर सब लोग यह करें, यह अच्छी बात है लेकिन इस पर कोई जबर्दस्ती तो नहीं की जा सकती है, यह केवल एक विचार है जिसका पालन करना चाहिए।

डा. वापू कालदाते: : कम से कम जो पार्टी वाले हैं, वे तो करें,। अपनी पार्टी में करें, हमारी पार्टी में करें।

Producion and Export of Steel

*43. SHRI IQBAL SINGH: Will the Minister of STEEL be pleased to state:

(a) what steps are being taken by Government to increase the production of steel in the country;

(b) whether Government have formulated long-term strategies to increase the export of steel.

(c) if so, the details thereof; and

(d) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI SONTOSH MOHAN DEV): (a) to (d) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Government have taken a number of steps to increase the production of steel in the country. Modernisation and expansion of Public Sector Steel Plants has been taken up. Government also have adopted various policy measures to facilitate and encourage the creation of additional steel production capacities in the Private Secttor. These include:

(i) removal of iron and steel from the list of industries reserved for public sector;

(ii) exemption of iron and steel industry from the provisions of compulsory Licensing;

(iii) inclusion of iron and steel in the list of high priority industry for purposes of foreign investment;

(iv) de-regulation of pricing and distribution of iron and steel;

(v) reduction of duty on import of capital goods; and

(vi) liberalisation of import and export policy.

(b) to (d) To increase exports including that of steel, Government have adopted various policy measures such as liberalisation of import-export policy, flexibility of value based advance licencing scheme and convertibility of rupee on trade account. Export of all items of iron and steel is freely allowed. It is expected that export of steel from India will increase to 6 million tonnes by 2001-2002.

श्री इकबाल सिंह: : सभापति जी, आदरणीय मंत्री जी ने जो उत्तर दिए हैं उनसे यह लगता है कि यह जो प्रमुख स्टील इंडस्ट्री है, यह बहुत ही उन्नति कर रही है। मैं यह जानना चाहता हूं मंत्री जी से कि जो हम बाहर के मुल्कों से ब्राजील, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, इन देशों से सोफैस्टिकेटेड स्टील मंगवाते हैं भारत के लिए और जैसा इन्होंने अपने उत्तर में कहा है कि मार्डनाईजेशन करने के लिए ये-ये कदम उठाए जा रहे हैं तो क्या मंत्री जी यह बताएंगे कि जब मार्डनाईजेशन हो जाएगा तो इन बाहर के मुल्कों से हमें सोफैस्टिकेटेड स्टील मंगवाना पड़ेगा या नहीं ?

दूसरा सवाल मैं यह पूछना चाहता हूं कि ये जो स्टील भारत में बनेगा, यह भारतवर्ष की जो डिमांड है उसको पूरा करेगा या नहीं या इसको हम केवल एक्सपोर्ट में ही लगाएंगे, इतना मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं।

SHRI SONTOSH MOHAN DEV: Sir, the basic idea of modernisation, upgradation and maintenance is to make ourselves self-sufficient in the production